हमारे पास समस्या है

परमेश्वर हम से क्या करने की माँग करता है।

+ पवित्रता
- पाप
= जीवन

''इस्राएलियो की सारी मण्डली से कह कि तुम पवित्र बने रहो; क्यों कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ'' (लैव्य व्यवस्था १९:२)।

''तू ने ठीक उत्तर दिया, यही कर तो तू जीवित रहेगा(लूका १०:२८)।''

परमेश्वर हममें क्या देखता है

- पवित्रता
+ पाप
= मृत्यु

''इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' (रोमियों ३:२३)

''परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नही सुनता (यशायाह ५९:२)।''

''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभू मसीह यीशू में अन्नत जीनव है (रोमियो ६:२३)''

मनुष्य कुछ अच्छे कामो को जोड़कर अपनी समस्या का समाधान करता है

''तब मै बुराई के बजाय अच्छा करूँगा।''

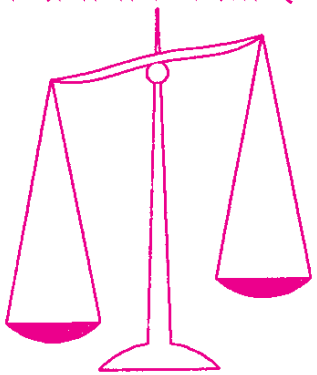

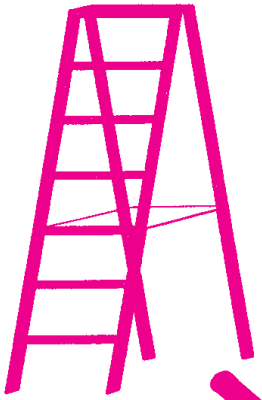

''मैं कठिन परिश्रम करूँगा।'';

''मैं दुसरे लोगों से अपनी तुलना करता हूँ।''

''ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलता है (नीतिवचन १६:२५)।''

''क्योंकि जो सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चुक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहर चुका है (याकुब २:१०)।''

परमेश्वर का समाधान - महान परिवर्तन

यीशू

पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात मसीह के बहुमुल्य लहु के द्वारा हुआ (१ पतरस १:१९)

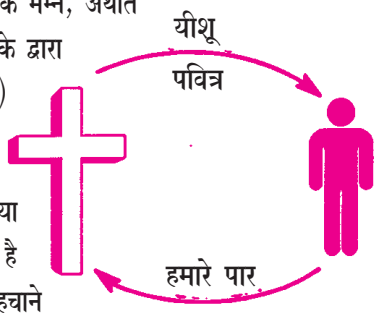

हम यह जानते है कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है, उसने हमे समझ दी है कि हम उस सच को पहचाने और हम उससे जो सत्य है अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते है, सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। (१ यूहन्ना ५:२०)

''यहोवा हमारी धार्मिकता रखेगा (यिर्मयाह २३:६)।''

यीशू

पापों की पूर्ण क्षमा जीवन

दुसरे दिन उसने यीशू को अपनी ओर आते देखकर कहा ''देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है। जो जगत का पाप उठा ले जाता है।''(यूहन्ना १-२९)

''हम तो सब के सब भेड़ो के समान भटक गये थे, हम मे से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया (यशायाह ५३:६)।''

''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ (२ कुरिन्थि.५:२१)''

परमेश्वर का उपहार - अन्नत जीवन

अनुग्रह के द्वारा

तो उसने हमारा उद्धार किया, और यह धर्म के कामो के कारण नही, जो हम ने आप किये, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वरा हुआ (तीतुस ३:५)।

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अन्नत जीवन है (रोमियो ६:२३)।

विश्वास के द्वारा

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नही मानता, वह जीवन को नही देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है (यूहन्ना ३:३६)।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नही, वरन परमेश्वर का दान है (इफिसियों २:८)।

उस के वचन के द्वारा

अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। (रोमियों १०:१७)।

क्योंकि मैं सुसमाचार से नही लज्जाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर युनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है (रोमियों १:१६)।

प्रभु भोज के द्वारा

तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नही, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ (तीतुस ३:५)

जब वे खा रहे थे तो यीशू ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलो को देकर कहा, ''लो खाओ; यह मेरी देह है'' फिर उसने कटोरा लेके धन्यवाद किया, और उन्हे देकर कहा, ''तुम सब इस में से पीओ, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतो के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है (मत्ती २६:२६, २८)।''

परमेश्वर की अशीष - नया जीवन

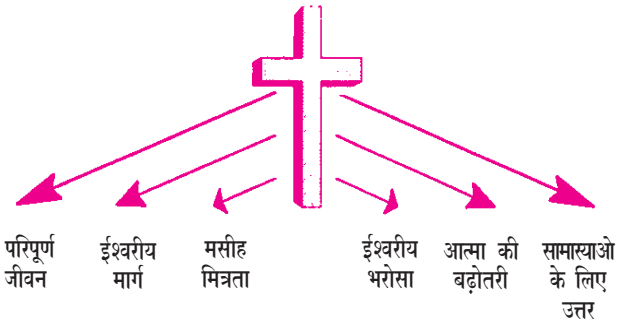

''चोर किसी और काम के लिए नही परन्तु केवल चोरी और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाँए और बहुतायत से पायें (यूहन्ना १०:१)।''

''क्योंकि हम उसके बनाए हुए है; और मसीह यीशू में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया (इफिसियो २:१९)।''

''हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा (मत्त ११:२८)।'';

''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है। ऐसे ऐसे कामो के विरोध में कोई भी व्यवस्था नही (गलातियों ५:२२-२३)।'';

''और संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाउगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा (भजन संहिता ५०:१५)।''

अच्छे कार्य हमे मसीही नही बनाते है,
परन्तू मसीही अच्छे कार्य कर सकते है।

सी.ई.एल.एम.प्रचार उपकरण CELM Outreach Resources

महान् बदलाव